: तृतीय अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित समस्याएँ ।

: तृतीय अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित समस्याएँ।

अ- सामाजिक समस्याएँ

(1) पति-पत्नी के बनते-बिगड़ते संबंध

(2) अंधश्रद्धा

(3) वासनाग्रस्तता

(4) भ्रष्टाचार

(5) व्यसनांधता

(6) रिश्तों का खोखलापन

(7) नारी उपभोग का साधन

(8) प्रेम

ब- आर्थिक समस्याएँ

क -शोषितों की समस्याएँ

ड - साम्प्रदायिकता की समस्याएँ

इ - शरणार्थियों की समस्याएँ

निष्कर्ष

: तृतीय अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित समस्याएँ।

अ- सामाजिक समस्याएँ :-

सामाजिक समस्या : व्याख्या एवं वर्गीकरण :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है/वह समाज में जन्म लेता है और इसी समाज में ही वह मर जाता है। अपनी रोजमरी की जरूरते पूरी करने के लिए मनुष्य दौड धुप करता है लेकिन व्यक्ति की जरूरते जैसे-जैसे बढती है वैसे-वैसे सामाजिक समस्या अपना उग्र रूप धारण करने लगती है। समस्या क्या है ? दया शंकर शुक्ल के अनुसार - ``संस्कृताचार्योंने समस्या का केवल यही अर्थ लगाया है, कि `समस्या` वह है, जिसमें अपनी एवं दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो, किन्तु आधुनिक युग में समस्या का स्वरूप परावर्तित होता गया और अब इसका अर्थ केवल कठिन वस्तु लिया गया प्रतित होता है। पर साथ ही साथ किसी भी कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर सम्भव एवं असम्भव सभी प्रकार के व्यापार के माध्यम से दे देना भी लक्ष्य रहा है।``[1]

सामाजिक समस्या निर्माण होने का प्रथम कारण है, समाज में व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं का बढ़ना और उसे पूर्ण करने में असमर्थ बन जाना। समाज में आये परिवर्तन और उसकी प्रक्रिया से निर्माण हुए सामाजिक विघटन के कारण ही विविध सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है।

सामाजिक समस्या का अर्थ समाजशास्त्र में इस प्रकार दिया है - ``समाज में कुछ समय तक निर्माण हुई ऐसी स्थिति जिसके कारण समाज में कुछ समय तक कुछ संकट या बाधा निर्माण होती है।``[2]

---

1. हिन्दी का समस्या पूर्ति काव्य : दया शंकर शुक्ल, पृ. 21
2. भारतीय सामाजिक समस्या : प्रा. वसंत वैद्य, पृ. 6-7

``समाजामध्ये निर्माण झालेली अशी परिस्थिती ज्यामुळे समाजाता काही काळ संकटे निर्माण होतात.``

सामाजिक समस्याओं पर विचार करते समय व्यक्तिगत समस्याओं की ओर भी गौर करना चाहिए क्योंकि आखिर में यही समस्याएँ सामाजिक समस्याओं का रूप धारण करती है।

भारतीय जनजीव्न में अनेक सामाजिक समस्याएँ दिखाई देती है उसका वर्गीकरण निम्नरूप से किया जा सकता है।

(1) पति-पत्नी के बनते-बिगडते संबंध :-

आधुनिक युग में पति-पत्नी के संबंध अनेक कारणों से टूटते जा रहे है। विवाह दो व्यक्तियों का संगम है उसमें कुछ अधिकारों के साथ कुछ कर्तव्य भी निभाने पड़ते है। इसके बारे में राजेश्वर गुरु के विचार दृष्टव्य है - ``विवाह एकांतिक उच्छृंखलता नहीं, सामाजिक बंधन है। इसी रूप में ग्रहण करके समाज की नैतिकता को स्वीकार करके अपने अधिकारों की रक्षा करते हुए और सही कर्तव्यों का पालन करते रहने से विवाहित जीवन सुखी ही होगा।``[1]

लेकिन पति-पत्नी के विचारों में वैषम्य आने के कारण यह संबंध निरर्थक बनते है। रांगेय राघव जी की कहानियों में इसका चित्रण हुआ है।

नारी का विक्षोभ :-

इस कहानी में लेखक ने सूरज और सविता के संबंधो के द्वारा बिगड़ते संबंधों को व्यक्त किया है। सूरज शादी से पहले सविता से बेहद प्यार करता है। सूरज के एक दोस्त चंद्रकांत से अनजाने में ही उसे पता चलता है कि सविता का पहले किसी मास्टर से प्रेम था। फिर भी वह सविता से शादी करता है। लेकिन संशय का जहर उसके मन में तुफान खड़ा करता है और एक दिन वह सविता से उसकी बिती जिंदगी के बारे में पूछता है। तब से दोनों के संबंध बिगडने लगते है। `सविता ने कहा - ``आप मुझ पर अगर शुरू से ही भरोसा नहीं करेंगे, और बाहरवालों की बातों का यकिन करेंगे, तो न जाने क्या हाल होगा --- आपने तो कहा था कि आप मुझे किसी तरह गुलाम नहीं बनायेंगे। पर मैं देखती हूँ, शादी के पहले जो

---

1. गोदान (राधाकृष्ण मूल्यांकन माला) राजेश्वर गुरु, पृ. 67

आपने अपने खयालों की आजादी दिखाई थी, वह सब झूठ थी।``[1]

सूरज रहता तो शहर में है, पर वह पुराने खयालों का है। अपनी जमींदारी, उसे जिंदगी की सच्चाई से भी जादा प्यारी लगती है। पर सविता पूर्णता आधुनिक विचारों की है। वह किसी के पैरों की जूती होना पसंद नहीं करती। सूरज उसे अपने गाँव ले जाता है। वह सूरज के घर की स्त्रियाँ अत्यंत पुराने खयालों की है। वह सविता के पढ़ने और मर्दो से बातें करने के खुलेपन पर हाहाकार मचाती है। सूरज तो खूद दोहरी जिंदगी जिता है। घरवालों की बातों को सुनकर सविता को पिटता हैं - ``मेरी बात पूरी भी न हो पाई थी कि मेरी पीठ, हाथ और पाँव पर सडासड बेत पडने लगे। मैं नहीं जानती कि मैं राई क्यों नहीं। मैंने केवल इतना कहा - मार ! और मार !``[2]

अत: सविता और सूरज से हमेशा के लिए अलग होने का फैसला करती है और फिर से नये सिरे से जिंदगी बसर करने का हौसला रखती है। - ``समाज में क्या एक व्यक्ति भी ऐसा न खोज सकूँगी, जिसमें आत्मा का थोडा भी सत्य हो, साहस शेष हो ? सब ही तो निर्जीव कायर नहीं होते।``[3]

धर्मसंकट :-

इस कहानी में राघवजी ने व्यसनांधता के कारण टूटनेवाला परिवार और पति-पत्नी में बिगढ़ते हुए संबंधों को अंकित किया है।``[4]

इस कहानी का पात्र हरदेव हमेशा शराब के नशे में धुन रहता है, शोर करता है। इस कारण हरदेव का और उसके बेटे भगवानदास का झगड़ा होता रहता है। इन दोनों के झगड़े के बीच हरदेव की पत्नी पिसती रहती है। ``इन दोनों के बीच का प्राणी एक स्त्री थी। वह एक की पत्नी थी, दूसरे की माँ। अर्थात हरदेव की स्त्री

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग 1 सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 81, 82
2. वही, भाग 1, पृ. 97
3. वही, भाग पृ. 99
4.

और भगवानदास की माता वह दोनों के झगड़े में मध्यस्थ बनती।``[1]

वह हमेशा दोनों को न झगड़ने की सलाह देती रहती है। वह द्विधा अवस्था में है लेकिन वह किसका पक्ष ले। भगवानदास की शादी हो चुकी है लेकिन उसकी बहन की शादी होनी है। हरदेव समझता है कि, भगवानदास की शादी करके उसे कोई सुख नहीं मिला। अत: बेटी की शादी करना उसकी जिम्मेदारी नहीं है। भगवानदास अब किसी भी हालत में घर में नहीं रहना चाहता। एक रोज उन दोनों में फिर से जोरों का झगड़ा हो जाता है। हरदेव भी अपनी सारी ताकद लगाकर भगवानदास को फेंक देता है। अपने बेटे का यह हाल देखकर उसकी माँ उसी वक्त घर छोडने का फैसला करती है - ``जिनावर ! जंगली ! हाथ न टूट गया तुम्हारा जो इस फूल को मसलने चले थे। ---उठो, बेटा, अब हम इस घर में नहीं रहेंगे। वह दुकान इसी की रहे, देखे कैसे चला लेता है। हम तुम मेहनत करके पेट पाल लेंगे।``[2]

<u>ऊँट की करवट</u> :-

प्रस्तुत कहानी में पंडागिरी करनेवाला गिरिजाकुमार और सरयू पति-पत्नी है। सारे गाँव पर दरोगाजी का प्रभाव है। अत: सारे पंडा लोग उससे दबे रहते है। दरोगा एक दिलफेक आदमी है। वह सरयू की सुंदरता को देखकर उसे एक बुढिया के जरिये खत भेजता है। सरयू राजी हो जाती है और दोनों चोरी छुपे मिलते है। गिरिजाकुमार भी इन्हें रोक नहीं सकता क्योंकि उसने खुद के स्वार्थ के लिये आनेवाले जिजमानों के लिए सरयू का उपयोग किया था। दरोगाजी का सरयू के साथ-साथ हुस्ना नामक एक और वेश्या से ताल्लुक था। रामदीन की बातों में आकर दरोगाने नशे में हुस्ना का घर जलाने का आदेश दिया। दरोगाजी पर मुकदमा दायर हो गया पर पुलिसवालों ने उन्हीं का साथ दिया और अदालत ने हुस्ना पर झुठी शहादत, झूठी रिपोर्ट, झूठा मुकदमा आदि जुर्म लगा दिये। दरोगा ने उल्टे उसी पर मुकदमा दायर किया। रामदीन अपनी चाल को देखकर खुश हुआ। इसीलिए रामदीन और गिरिजाकुमार दोनों नशे में धुन हो गये।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 34

2. वही, भाग-2, पृ. 39

पर दरोगा से सरयू के संबंध बढ़ते गये।

``पति ने देखा, वह झूम रही थी। वह नशे में थी। आज उसके मुख से हल्की-हल्की शराब की गंध आ रही थी। ऊँट करवट बदल चुका था ------वह दरोगा के पास से आ रही थी।``[1]

घिसटता कम्बल :-

इस कहानी का पात्र विपीन अपने माँ-बाप से झगड़कर अपने माँ-बाप से झगड़कर अपनी पत्नी रागिनी के साथ शहर में जाकर अलग घर बसाता है। पर उसे यह महसूस होता है कि वह घुट रहा है- ``विपीन देखता है कितना क्षुद्र है वह। संसार में अनेक कार्य है, अनेक-अनेक महापुरूष है, अनेक अनेक शक्तियाँ है किंतु वह कही भी कुछ नहीं है। उसकी असमर्थता ऐसी है जैसे टूटे हुए गिलास के शीशे के टुकड़े। वह केवल घिसटता चला जा रहा है।``[2]

विपीन प्रेम को रुपयों से महत्त्वपूर्ण मानता है पर उसकी पत्नी रागिनी रूपयों को महत्त्वपूर्ण मानती है। इसकारण उनमें कभी झगड़ा नही होता। पर दोनों का जीवन खालीपन से भरा हुआ है। इस कहानी में `न पकनेवाली दाल` इस प्रतीक के द्‌वारा लेखक ने जिंदगी को व्यक्त किया है। रागिनी इस न पकनेवाली दाल से उब जाती है पर वह सोचती है जिंदगी भी इसी दाल के समान ही तो है। जिसमें न जाने कितने समझौते करने पड़ते है इसीकारण हम कभी जिंदगी को त्याग नहीं देते। पति और पत्नी में अगर अगाध प्रेम हो तो यह जीवन का अथांग सागर सरल रूप से पार किया जा सकता है। रांगेय राघव की इसी जीवन निष्ठा को व्यक्त करत हुए डा. लक्ष्मणदत्त गौतम कहते है - ``रांगेय राघव को जीवन के प्रति अगाध आस्था है, इसीलिए वे कहते है कि, मनुष्य का जीवन भी ऐसी ही एक अगम पहाडी है जिसे कोई भी बिजली कितने भी वेग से गिरकर चकनाचूर नहीं कर सकती।``[3]

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 106

2. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग -2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 117

3. आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना - डा. लक्ष्मणदत्त गौतम, पृ. 292

(2) अंधश्रद्धा :-

डा. रांगेय राघवजी ने अपनी कहानियों में समाज में फैली कुप्रथाओं और रूढ़ियों के कारण फैले अंधकार और शोषण का वर्णन किया है। डा. लक्ष्मणदत्त गौतम डा. रांगेय राघवजी के रूढियों के विचारों को व्यक्त करते हुए कहते है - ``रांगेय राघव रूढ़ि उसे मानते है जो आज की व्यवस्था में अव्यवहारिक हो गई है लेकिन आज भी जनसाधारण को बेवकूफ बनाने के लिए चन्द-एक प्रतिक्रियावादियों द्वारा उसका उपयोग किया जा रहा है।``[1]

रांगेय राघवजी की निम्न कहानियों ने समाज में फैली हुई रूढियों और अंधश्रद्धाओं को नष्ट करने की प्रेरणा दी है।

<u>पेड़</u> :-

इस कहानी में पंडित सालिगराम नेक दिल इन्सान है। उनकी छोटी सी हवेली है। उसी हवेली के सामने छोटे से मैदान में एक पेड़ लगा है। जिसकी छाया में बच्चों को खेलने की पूरी छूट दी गयी है। पंडितजी को उस पेड़ की हरियाली बहुत पसंद है। लेकिन उसी पेड़ के नीचे खेलती हुई उनकी बच्ची को साँप काटता है और बच्ची मर जाती है। इसी प्रसंग से पंडितजी उस बरगद के पेड के दुश्मन हो जाते है। वे सोचते है कि इसी पेड़ ने उनकी बच्ची को खा लिया है और अब वह सारे लोगों को खा जाएगा।

``पहली बार उन्होंने बरगद की ओर आँखे उठाई जैसे अपने किसी विराट शत्रु की ओर देखा हो। वे देर तक उसे घुरते रहे। यही है वह पुरखों का दैत्य जो आज संतान को ही खा जाना चाहता है।``[2]

पडोसी करीम पंडितजी को समझाने की कोशिश करता है पर वही नहीं मानते। वे पेड़ काटने के लिए मजदूरों को कहते है। पेड़ काटते समय एक मजदूर को साँप काटता है। पंडितजी विक्षोभ से

---

1. आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना - डा. लक्ष्मणदत्त गौतम, पृ. 311

2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 122

चिल्लाने लगते है। भय के कारण सब मजदूर भाग जाते है। बाद में जमींदार आकर पंडितजी को समझाते है पर वे किसी की नहीं मानते। बाद में जमींदार के नौकर का लठ्ठ पंडितजी के सर पर पड़ता है।

रोने का मोल :-

इस कहानी के पंडित श्रीनारायण अंधश्रद्धालु है। उनके घर के सामने कुत्ता रोने लगता है तो वे और उनकी बिवी बेचैन हो जाती है। बहुत देर तक कुत्ता रोता है, पर कोई उसे पत्थर नहीं मारता। तो पंडित खुद उसे पत्थर मारते है और कहते है - ``इतने सड़क पर चलते है कोई कुछ नहीं कहता। धर्म नहीं रहा, वर्ना दिन दहाडे कही भला सड़कपर कुत्ता रोने दिया जाता है।``[1]

उनकी बिवी भी अपने बच्चे को कोसती हुई कुत्ते के रोने के बारे में कहती है - ``नहीं रे यह बुरा सौन है। यमदर्शन होते है। क्यों मोहल्ले में मारे है सबको।``[2]

कुत्ते के रोने से परेशान होकर पंडितजी चुंगी में अर्जी देते है। जिससे कुत्तो को पकड़ने के लिए भंगी आ जाते है। लेकिन रोनेवाला कुत्ता उन्हें नही मिलता। भंगी एक गाभिन कुत्तिया को गोली खिलाकर मारते है। इसपर एक बुढिया पंडितजी को कोसती है। अंत में कुछ मेहतर रोनेवाले कुत्ते को मार डालते है। उसकी दर्दनाक मौत देखकर पंडितजी व्यथित हो जाते है।

प्रवासी :-

इस कहानी का पात्र गोपालन मन्दीर का पुजारी है। उसकी प्रेमिका कोमल का पति मरने के बाद उसका क्रिया-कर्म करता है। मृतक के एकादश का यमभोज पवित्र वैदिक रिति से चलनेवाला ब्राह्मण उसे खाकर अधिक दिन जीवित नही रहता। गोपालन यह एकादश का यमभोज करना चाहता है। गोपालन का पिता अंधश्रद्धालु है। यह यमभोज खाकर बेटा मर जाएगा इसीलिए वे खुद एकादश का यमभोज करता है। गोपालन को बहुत दु:ख होता है। वह पिताजी से कहता है - ``किंतु, पिताजी, तुम मर

1.रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 132

2. वही, पृ. 132

जाओगे !क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र आचरण रखनेवाला ब्राह्मण इसके बाद अधिक दिन तक नहीं जीवित रहता ?``[1]

अन्धविश्वासी पिता नयनाचारी यह सुनकर मन में गन लेता है कि अब वह मर जाएगा। घर आते ही वह शैया पर जा लेटता है और मर जाता है। नयनाचारी का अन्धविश्वास ही उसकी मौत का कारण बन जाता है।

(3) वासनाग्रस्तता :-

रांगये राघव सामाजिक नैतिकता के प्रति सतर्क रहे है। उन्होंने समाज में नैतिकता के प्रश्न को प्यार, विवाह शृंगार के विवेचन के साथ-साथ व्यापक स्तर पर आंका है। समाज में छिपी हुई वासनांधना पर भी उन्होंने करारा व्यंग्य किया है।

ऐयाश मुर्दे :-

इस कहानी का पात्र फकिर एक रफूगर का बेटा है। उस के घर के सारे लोग मर गए है और वह फकिर बनकर अपना पेट पालता है। जामा मस्जिद की छाया में रहता है। शाह के मजार पर मिन्नतें माँगने औरतें आती रहती है। वह फकिर को पवित्र दृष्टि से देखती है। इसीतरह एक औरत हमेशा औलाद की मनौती मनाने के लिए शाह के मजार पर आती रहती है। एक दिन फकिर उससे पूछता है कि तू यहाँ क्यों आती है ? तो वह मजबूर औरत अपनी मजबूरी बताती है। फकिर उसे श्याम ढलने के बाद मजार पन आने के लिए कहता है। और उस स्त्री की इज्जत लुटने की कोशिश करता है।

``फकिर पागल हो रहा था। उसने उसे अपनी ओर खींचकर उसे अपने शरीर से लगाकर खींच लिया। स्त्री छटपटाने लगी। उसके मुँह से निकला, ``मैं तुम्हारी बेटी हूँ बाबा ! यह क्या कर रहे हो ?``[2]

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 393

2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 70

इस तरह लेखक ने धर्म के नाम पर चल रही अनैतिकता का पर्दाफाश किया है।

तबले की धुंधलका :-

प्रस्तुत कहानी भारत विभाजन से संबंधित है। कहानी का प्रमुख पात्र, उसकी बहु और उसकी बहन शरणार्थी बनकर इस देश में आए है। साम्प्रदायिक दंगे जोरों पर है। उन्हें यहाँ रहने के लिए कोई मकान नहीं मिलता। मकानदार पगड़ी माँगते है। आखिर में एक आदमी उन्हें मकान देने के लिए तैयार हो जाते है। तबेला देनेवाला आदमी सेठ के यहाँ काम करता है। तबेला सेठ का ही है लेकिन वह आदमी इनसे कहता है कि अगर यहाँ रहना है तो वह उसकी जवान सुंदर बहन के साथ नाजायज रिश्ता रखेगा।

लेखक ने यहाँ मजबूर विवश लोगों की लैगिंक शोषण की सामाजिक वृत्ति पर क्रोध व्यक्त किया है। कहानी का नायक `मैं` के मुँह से मानो लेखक ही कहते है - ``पर वह आदमी हस रहा था। मैं चाहता हूँ मैं उसका खून कर दूँ। उसका गला घोट दूँ। उन आँखों को ऊँगली डालकर बाहर खींच लूँ, जिनमें इतना बड़ा पाप जीवित जल रहा था और फिर उस जगह मिट्टी भर दूँ। सदा के लिए इस आदमी का सीना फाड़कर हृदय का खत पी जाऊँ। नहीं मुझे मंजूर नहीं है।``[1]

ममता की मजबुरी :-

प्रस्तुत कहानी एक मजबूर नारी के जीवन पर चित्रित है। जिसने अपने ही एक दिन के बच्चे को गला घोंटकर मार दिया है। वास्तव में यह लड़की एक शिक्षक की पुत्री है। पिताजी की मृत्यु के बाद उसका कोई सहारा नहीं है। वह बच्चों को पढ़ाकर अपनी रोजी चलाती है। वह अब तक कुँवारी है लेकिन नाजायज बच्चे की माँ बननेवाली है। अत: समाज के डर से, बच्चे की चिंता से उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। अंत में सोचने के बाद वह इस नतीजे पर आती है कि बच्चे को जिंदा रखना याने उसकी जिंदगी किड़े-मकौडे की तरह करना है। अत: वह अपने ही बच्चे का गला घोंट देती है। उसे खून के इल्जाम में अदालत में पेश किया जाता है। वह अपना गुनाह कबूल करती है पर जब उसपर मजे

1.रांगये राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-2, संम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 30

लुटनेवाली गुलछर्रे उडानेवाली औरत ऐसा आरोप किया जाता है तब वह क्रोध से चीख उठती है। वास्तव में पिता की मौत के बाद वह अकेली वित्रश हो जाती है। नौकरी माँगने के लिए अपने पिता के मित्र के पास चली जाती है जो एक प्रतिष्ठित बुजुर्ग व्यक्ति है। अपने साथ वह अपने गुरू को भी ले जाती है। पर वे दोनों मिलकर उसपर बलात्कार करते है। ``मैं उस वक्त मजबूर कर दी गई थी। समाज के दावेदारों ने यह पाप जबर्दस्ती दिया। धोखे से मुझसे बलात्कार किया गया था। और वह भी कौन? मेरे पिता के ही मित्र है। नगर में प्रतिष्ठित व्यक्ति है। पिता का मित्र जानकर मैं उनसे नौकरी माँगने गई थी कि कहीं मुझे जगह दिला दे। और गई थी उनके साथ, जो मेरे गुरू थे। वही मुझे ले गये थे। उन दोनों ने मुझे जबर्दस्ती गन्दा कर दिया। जज साहब।``[1]

लेखक ने यहाँ सफेदपोश चेहरों के पीछे दबी कामांधता, नीचता को व्यक्त किया है।

<u>भय</u> :-

`भय` राघवजी की ग्रामीण कहानी है। इस कहानी के द्वारा लेखक ने ग्रामीण व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश और जनसाधारण के सामन्ती संस्कारों के प्रति विक्षोभ व्यक्त किया है। कहानी में कुंदन, तुरसी का साला तुरसी के बेटे की बहू के साथ बलात्कार करता है। रंगे हाथो पकड़ा जाने के बाद तुरसी आदि को बुरी तरह घायल करके दल-बल समेत भाग जाता है। तुरसी न्याय चाहता है।पर न्याय आजकल किसको मिलता है? आखिर में पुलिस, पंच मिलकर तुरसी को ही लूट लेते है।

प्रस्तुत कहानी के द्वरा लेखक ने ग्रामीण जीवन में खोखली न्यायव्यवस्था, पनपती कामांधता का परिचय दिया है।

(4) भ्रष्टाचार :-

भ्रष्टाचार वर्तमान समाज के लिए अभिशाप बन गया है। समाज में दिन-ब-दिन भ्रष्टाचार बढ़ता चला जा रहा है। इसके कई कारण है जैसे उचित वेतन का अभाव, बढ़ती हुई मँहगाई, बढ़ती हुई जरूरतें। पुलिस तो इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि इन्होंने खुद ही कानून का सौदा करना शुरू कर

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 372

दिया है। कृष्णकुमार बिस्सा वर्तमान भ्रष्टाचार के बारे में लिखते हैं - ``वर्तमान में पुलिस के अतिरिक्त अन्य ऐसे विभागों में भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है। कोई भी ऐसा विभाग नहीं रहा है जहाँ कोई भ्रष्टाचारी नहीं हो। बिना रिश्वत दिये काम को संपूर्ण कराना कल्पना से परे की बात हो चुकी है। वर्तमान में किसी को प्रसन्न किया जाना आवश्यक होता है।``[1] रांगेय राघवजी ने पुलिस तथा सरकारी नौकर और गाँव के मुखिया आदि लोगों की भ्रष्टाचारी प्रवृत्ती पर व्यंग्य किया है।

तिरिया :-

इस कहानी का पात्र पिल्ली मन्दो से शादी करता है। पर मन्दो का रहन सहन और उसका हमेशा पान खाकर जगह-जगह थूंकना लोगों को पसंद नहीं है। अत: पिल्ली जब काम पर जाता तब गाँव के लोग मन्दो को कोसते रहते है। एक दिन पिल्ली काम पर से आते ही वह देखता है कि मन्दो रूठ कर बैठी है। पिल्ली के पुछने पर वह गाँव के लोगों की उससे शिकायत करती है। पिल्ली क्रोधित हो जाता है। गाँव का चौकीदार पिल्ली से मन्दो की शिकायत करने लगता है तो मन्दो अपना जूता फेंककर उसे मारती है। गाँव के सामने हुए इस अपमान का बदला लेने के लिए चौकीदार लकखा बुढ़े गुलाब के माध्यम से पुलिस को रिश्वत खिलाकर गिरफ्तार करना चाहता है।

-लक्खा चौकीदार नहीं समझा। गुलाब उसे ले चला सीधा थाने पर गया और थानेदार को एकांत में सारी कथा सुना कर कहा - ``अब कहौ मालिक का करै ---।``

बीस रूपये उनके हाथ में सरका दिये। थानेदार साहब दुबले पतले आदमी, थे गाँव के, पर शहर में पढ़ थे। फूल सूघते थे और रेशमी रूमाल रखते थे। बात करने की फीस लेकर उन्होंने माथे में बल डाल कर कहा - ``जवान है।``[2]

अदालत में मुकदमा चलता है। अपनी चालाखी से मन्दो खुद को छुड़ा लेती है। पर बेकसूर पिल्ली को जेल हो जाती है

---

1. साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना, कृष्णकुमार बिस्सा, पृ. 154
2. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 46

चिड़ी के गुलाम :-

इस कहानी का पात्र प्रताप अत्यंत इमानदार है। मैजिस्ट्रेट के दफ्तर में उसे नौकरी लगती है। वहाँ का रिश्वत का कुडा करकट, देखकर वह अपना इस्तीफा देने की बात पर विचार करने लगता है। अपनी पत्नी को इस विषय में कहता है - ``बात यह है उसने कहा-``जहाँ मैं काम करता हूँ वहाँ इमानदारी का नाम भी नहीं है। निहायत कमीन किस्म के आदमी है। बात-बात पर रिश्वत।``[1]

प्रताप की इस इमानदारी के कारण उसके दफ्तर के बाकी लोग उसके दुश्मन हो जाते है - ``न खाता है, न खाने देता है। अब आप से क्या छिपा है। इतने आदमी है। इतना खर्चा है, और मँहगाई से तो आप वाफिक है ही।``[2]

इस विरोध को खत्म करने के लिए वह रिश्वत लेने लगता है। एक दिन मैजिस्ट्रेट के हाथों रिश्वत लेते हुए पकड़ा जाता है। दफ्तर के सब लोग उसपर व्यंग्य कसते है। प्रताप को गिरफ्तार किया जाता है पर अब वह लक्ष्मी का जादू जानता है। वह रूपये देकर छुटता है। रिश्वत का नया तरीका खोजता है और अपने अफसर बनने की बात सोचने लगता है।

भय :-

इस कहानी में तुरसी का साला कुंदन तुरसी के बेटे की पत्नी के बाद बलात्कार करता है। रंगे हाथों पकड़ा जाने के बाद तुरसी आदि को बुरी तरह घायल करके दल-बल समेत भाग जाता है। तुरसी न्याय चाहता है। इसीलिए वह थाने जाता है। तब उसे वहाँ पता चलता है कि कुंदन दरोगा को पैसे देकर गया है। - जिस समय वह दरोगा के पास पहुँचा सिपाही ने कहा - कुंदन आया था दो सौ दे गया है।``

``दो सौ !`` तुरसी ने लड़खडाती जवान से कहा।

``तो तीन सौ मैं दूँगा।``[3]

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 17
2. वही, पृ. 18
3. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 180

तुरसी तीन सौ रूपये दरोगा को देता है पर कुंदन जात पंचायत में रिश्वत खिलाकर फैसला अपनी ओर कर लेता है। तुरसी अपनी बहू की बलात्कार की बात पंचायत में नहीं कहता और फैसला कुंदन की ओर हो जाता है।

पंच परमेश्वर :-

इस कहानी में भी राघवजी ने पंचो को परमेश्वर मानने की पुरानी कथा, पंचो की भ्रष्ट नीति आदि पर व्यंग्य किया है। यह कहानी दो भाईयों चंदा और कन्हाई के जीवन पर आधारीत है। चंदा की माँ रम्पी ने अपना पति मरने पर देवर याने कन्हाई के बाप के साथ घर बसाया । इसकारण कन्हाई के बाप ने कन्हाई की माँ की ओर ध्यान नहीं दिया और वह बुरी हालत में मर गई। कन्हाई को इसका गुस्सा था। रम्पी की मौत के बाद कन्हाई ने चन्दा की शादी फुलों से कर दी। पर चन्दा गरीब था। कन्हाई के पास बहुत रूपये जमा थे। अत: फुलो सुखी रोटी के साथ चन्दा के पास नहीं रह सकी। उसने कन्हाई को अपना लिया। कन्हाई की भी बहुत दिनों से जवान फूलो पर नजर थी। चन्दा अपनी बीवी को अपने भाई के घर में बसा देखकर क्रोधित हुआ। उसने पंचायत बुलाने का फैसला किया। कन्हाई ने पंच चौधरी मुरली को रूपये देक, शराब पिलाकर अपनी ओर कर लिया। पंचायत में बेकसुर चन्दा पर ही फूलो ने उसके बाप को वायदे के जेवर न देने का झुठा इल्जाम लगाया और उसके खिलाफ गवाही दी। अत: बेकसूर चंदा को ही पचीस रूपये दण्ड किया और फूलो कन्हाई के पास चली गई।

प्रस्तुत कहानी के द्वारा राघवजी ने पंचो को परमेश्वर मानने की धार्मिकता और पंचों की घटती हुई नैतिकता का पर्दाफाश किया है।

(5) व्यसनांधता :-

रांगेय राघवजी ने अपनी कहानियों में समाज में दिन-ब-दिन बढ़ती हुई व्यसनांधता को भी उजागर किया है। समाज में व्यसनांधता एक फॅशन हो चुकी है। इसके कई कारण है जैसे विदेशी संस्कृति का प्रभाव, बेरोजगारी, दिन-ब-दिन बढ़ती हुई मानसिक अस्थिरता, बिमारियाँ, मन में अकारण पलनेवाला डर आदि।

धर्मसंकट :-

इस कहानी में पति और बेटे की व्यसनांधता के बीच पिसती हुई असहाय नारी का आक्रोश व्यक्त हुआ है। हरदेव और उसका बेटा भगवानदास दोनों को नशे की बुरी लत लग चुकी है। पिता और पुत्र के व्यक्तित्व का फर्क दिखाते हुए लेखक ने शराब और भांग का उदाहरण दिया है।

``पिता और पुत्र में वही भेद था जो शराब और भांग में होता है। शराब में दिमाग घूमता है, उसका नशा शोर करवाता है, दंगा मचवाता है, किंतु भंग में तरंग होती है, दिमाग उपर उठता है। आदमी बोदा हो जाता है।``[1]

व्यसनांध आदमी कभी खूद को व्यसनांध नहीं समझता। वह हमेशा अपने से दूसरा किस प्रकार गया गुजरा है यही ढूँढता रहता है। हरदेव और भगवानदास में बिल्कुल यही बात है। ``रात होते-होते दोनों आपस में जोर जोर से बाते करने लगते। हरदेव शीघ्र ही गर्म हो उठता। उसे पड़ोस के मुंशी जी जिस दिन देशी अद्धा पिला देते, उस दिन वह शहंशाह हो जाता। बेटा भांग से आगे न बढता। दोनो एक दूसरे को नशेबाज समझते।``[2]

हरदेव और भगवानदास के रोज के झगड़े से भगवानदास की माँ तंग आती है। और एक दिन भगवानदास अपनी माँ को लेकर हमेशा के लिए घर छोडकर चला जाता है।

धर्म का दांव :-

इस कहानी में राघवजी ने गोविंद नामक पात्र को लगी जुए की लत और उस लत के कारण उसका शराबी बनना और इन सारी बातों से उसका टूटता-बिखरता हुआ परिवार अंकित किया है। गोविंद को किसी पंडित ने बताया है कि वह जिसे हाथ लगायेगा वह सोना हो जाएगा।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 34

2. वही, पृ. 34

गोविंद के घर की हालत इतनी अच्छी नहीं है। अपनी बिवी की खंगवारी गिरवी रखकर वह मुल्लाजी और गबदू के साथ जुआ खेलने जाता है। वहाँ अपने सारे रुपए गँवाता है। रूपए गँवाने पर गोविंद को पछतावा होता है-

``मारा जाऊँगा कसम से, बहू की खंगवारी है। मर जायेगी। गबदू देख, लौढ़िया भूख से तड़फ-तड़फ कर मर जावेगी।``[1]

मुल्लाजी को गोविंद के जिते हुए रूपयों में भी पाप नजर आता है। इसीलिए वह उसके रुपये वापस देने जाता है तो उसे पत चलता है कि गोविंद हारकर भी फिर से अपनी पत्नी की बिछिया गिरवी रखकर जुआ खेलने गया है। तभी शराब के नशे में धुन हारा हुआ गोविंद वहाँ आ जाता है। लेखक ने यहाँ यह बताने की कोशिश की है कि, एकबार अगर बुरी लत लग जाती है तो इन्सान उस चक्रव्युह में फँसता ही चला जाता है। जुए की लत के साथ लगी शराब की लत गोविंद की जिंदगी तबाह कर देती है।

<u>नरक</u> :-

इस कहानी में लेखक ने जुए की लत लगे हुए पन्ना नामक युवक की नष्ट होती हुई नैतिकता का चित्रण किया है। पन्ना की माँ अत्यंत गरीब औरत है। दुसरों के बर्तन माँजकर वह अपना और बेटे का पेट पाल रही है। उसका पति मर गया है।जुए की लत के कारण पन्ना ने उसकी जिंदगी हराम कर दी है। पन्ना की माँ उसे जुआ खेलने रूपए नहीं देती तो वह उसे अश्लील गालियाँ देकर पीटता है।

``उठा तू हाथ उठा। आज तू मार ! अपनी माँ को मार ! सपूत बेटा ! अरे तेरे मुँह पै आग बराय दू -- कढ़ी खाये।``[2]

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ- भाग2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 76

2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 242

(6) रिश्तों का खोखलापन :-

आधुनिक समाज में बनाये हुए हर एक रिश्ते के पिछे कोई न कोई स्वार्थ छिपा हुआ दिखाई देता है। भाई-भाई, भाई-बहन, बेटा-बाप, दोस्त-दोस्त, प्रेमी-प्रेमिका, पति-पत्नी आदि सभी रिश्तों में खोखलापन महसूस हो रहा है। रांगेय राघवजी ने समाज में पल रही ऐसी नीति का भी पर्दाफाश किया है।

दिवालिए :-

यह कहानी पाँच दोस्तों के जीवन पर आधारित है। इस कहानी का उस्ताद अपने चार दोस्तों को हमेशा मदत करता रहता है। पर जब सारे दोस्तों का उल्लू सीधा हो जाता है तो एक-एक करके सारे दोस्त उससे अपना पिछा छुडा लेते है। उस्ताद से चारों दोस्त किसी न किसी कारणवश रूपए पुँढ लेते है। जब उस्ताद को रूपयों की जरूरत महसूस होती है तो सारे दोस्त उससे आँखे चुराते है।

-``उस्ताद चुप हो गए। वह मन ही मन सबकुछ समझ गए थे। यही लोग थे जिनको उन्होंने जी खोलकर चाय और सिगरेट पिलाई थी। तब इनके पास कोई सिद्धांत नहीं था। आज मौके पर सब पैगम्बर बन बैठे है।``[1]

-``उस्ताद की कुछ भी समझ में नहीं आया। वह फिर उठ खड़े हुए। कहाँ है वे दोस्त, जो उन्हें ढाढ़स बँधाते थे ? कहाँ है वे जो उनके बोलने के पहले उनकी तरफ से जवाब देने को तैयार रहते थे ? आज कहीं कोई नहीं है।``[2]

धर्मसंकट :-

यह कहानी व्यसनांध पति और बेटे की जिंदगी में पिसती हुई एक असहाय्य स्त्री की कहानी है। इस स्त्री का पति भगवानदास एक नंबर का शराबी है। अपनी जिम्मेदारी से उसे कोई लेन देन नहीं

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा अशोक शास्त्री, पृ. 173
2. वही, पृ. 176

है। इस स्त्री का बेटा भी दिन भर भांग की नशे में चूर रहता है। अत: दोनों को इस स्त्री से कोई लेन देन नहीं है। उसकी भावनाओं की दोनों भी कद्र नहीं करते। मानों एक दूसरे के ऊपर आया हुआ रिश्ता मजबूरी के कारण ठो रहे है। भगवानदास यह सोचता है कि बेटे की शादी से उसे कोई सुख नहीं मिला। अत: वह अपनी बेटी की शादी की जिम्मेदारी से मुखरना चाहता है। स्त्री उसे अपनी जिम्मेदारी की याद दिलाती है। - ``तुम इस घर से अलग हो ? मैं पूछती हूँ, तुम अपने को घर का मालिक क्यों नहीं समझते ? बेटी का ब्याह तुम्हें नहीं करना है ? वह सिर्फ माँ बेटे की जिम्मेदारी है ? बेटी तुम्हारी नहीं है ? कह दो ! मैं पूछती हूँ आज कह दो !``[1]

आकर्षण :-

यह कहानी दो सौतले भाईयों के जीवन पर आधारित है। सुखदास और लालदास दोनों सौतेले भाई है। लालदास की शादी पहले हुई है। उसे एक लड़का है। सुखदास समाज सुधारक है। चालीस की उम्र होने पर भी उसने शादी नहीं की। तो लालदास समझने लगा कि उसका बेटा ही जायदाद का इकलौता वारीस होगा। इतने में सुखदास ने एक विधवा के साथ शादी कर ली। उसे एक लड़का हुआ। पर सौतेले भाई और उसकी बिवी को अपने बेटे का हक्क कोई छिनता हुआ महसूस हुआ। अत: उन्होंने चाल खेलकर सुखदास की पत्नी चंपा के चरित्र पर लांछन लगाकर उसे भगा दिया। सुखदास को जीवन से विरक्ती हुई और उसने सारी जायदाद अपने भतिजे के नाम कर दी। बाद में चंपा वापिस आनेपर सुखदास को अपने ही भाई की जायदाद के कारण की हुई नीच हरकत का पता चला।

``मैं सचमुच चाल में आ गया था, वकील साहब ! अब एक ही गुन चाहता हूँ। मेरी जायदाद, जो मैंने पागलपन में भतीजे के नाम लिख दी थी, वह मेरे लड़के के नाम करा दीजिए। मैं नहीं देख सकता कि मेरा लड़का दर दर की भीख मांगे और दूसरों की औलाद गुलछर्रे उड़ाये।``[2]

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 36

2. वही, पृ. 130

<u>बाप का दोस्त</u> :-

यह कहानी दो दोस्तों की दास्तान है। शिवनाथ, हरनाथ तथा निर्मला के पिता और कृष्णसहाय दोनों एक जमाने के दोस्त थे। शिवनाथ के पिता नामी वकील थे। वह अत्यंत सहृदय थे। कृष्णसहाय अत्यंत गरीब आदमी था। अत: वकीलसाहब ने खुद अपने पड़ोस का घर खरीदकर कृष्णसहाय के नाम किया। वकीलसाहब की मौत हुई और यहा तक आते कृष्णसहाय कॉंग्रेस के एक सम्मानित व्यक्ति बन गये थे। पिता की मौत के बाद शिवनाथ, हरनाथ के घर की हालत बुरी हुई। उन्होंने सोचा पिता के दोस्त कृष्णसहाय उन्हें हर तरह की मदत करेंगे पर वकीलसाहब के निकाले हुए स्कूल के ट्रस्टी भी कृष्णसहाय थे। अत: पहले तो उन्होंने वकीलसाहब के नाम एकत्रीत हुए पचीस हजार रूपये ऐंढ लिए। वकीलसाहब की पत्नी निर्मला को स्कूल में नौकरी की बात चलाने जाती है तो कृष्णसहाय उसे कोई इज्जत नहीं देता।

हरनाथ अपना उद्वेग व्यक्त करते हुए कहता है -

``मैंने पहले ही कहा था कि मत जाओ। अब गई तो क्या नतीजा निकला। मैं तो इस आदमी को बाबूजी के वक्त से ही जानता हूँ पर मजबूर था। बाबूजी किसी को भी नीचता और ओछापन करते देखते तो तुरन्त तरह दे जाते, पर मैं चूप नहीं रह सकता। बाबू जी की भलमानसाहत से यह नंगा आज दुनिया में इज्जत पा रहा है, उनकी बदौलत इससे दो आदमी बात करते है ----``[1]

``---जिस पतल में इसने खाया उसी में छेद करना चाहता है ? आस्तीन का सांप ---``[2]

इस तरह लेखक ने समाज में नष्ट होतो इन्सानियत और घटती हुई नैतिकता को व्यक्त किया है।

(7) नारी उपभोग का साधन :-

पुरूषप्रधान संस्कृति के कारण भारतीय समाज में प्राचीन काल से नारी का शोषण हो रहा है। रूढ़ी, परंपरओं और पुराने ढकोसलों में उसे इसतरह ढाला गया है कि आज के आधुनिक संस्कृति में

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियॉं-भाग 1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 208

2. वही, पृ. 208

भी वह इन जोखड़ों से पुरी तरह से मुक्त नहीं हो सकी है। भारतीय संस्कृति के नाम पर नारी के अधिकारों को पुरूषों ने अपने हाथ में ले लिया है। उसे बहन, बेटी, पत्नी, बहू आदि रिश्तों मे, इन रिश्तों की जिम्मेदारियों में इसप्रकार उलझाया गय है कि अगर उसने जरा भी स्वतंत्रता पाने की कोशिश की तो समाज में हाहाकार मचता है। और भारतीय समाज में वास्तविक बात तो यह है कि भारतीय स्त्री ही भारतीय स्त्री की स्वतंत्रता में रोक बन गयी है।

रांगेय राघव जी ने इन सभी बातों को महसूस किया और भारतीय नारी को आजाद करने की कोशिश की।

नरक :-

यह कहानी वास्तविक रूप से स्त्री की जिंदगी `नरक` ही है इसका विश्वास दिलाती है। इस कहानी के कंजर जाति के लोगों का चोरी करना ही व्यवसाय बन गया है। किसी प्रदेश में तंबू डालना दिनभर आवारा लोगों की तरह घुमना, भिख माँगना, जहाँ मौका मिले वहाँ चोरी करना, शराब पीना, रोटी और औरत के लिए झगड़े करना, और बच्चे पैदा करना ऐसे ही किडे मकौडे की तरह इनकी जिंदगी है। इस जाति की औरतों की जिंदगी से ज्वादा भेड़ बकरियों की जिंदगी अच्छी है। इस जाति की औरतों का कोई चरित्र नहीं है। एक औरत कई लोनों के साथ संबंध रखती है।

इस कहानी में पुलिस कंजर युवकों को पकड़कर ले जाती है तो औरतों की वासना बेचैन हो जाती है - ``मोती ने पुकार कर कहा - ``औ री सुहैल अब तो कोई मरद नहीं रहा।``

सुहैल ने ठहका मारकर कहा - ``बुड्ढे तो है ही।`` मोती भी हँस पडी। बुढ़ी कामनी भी आ गयी। कामनी ने कहा - ``ओहो, दे दिन मरद नहीं रहा तो परान सूख गये ! बेटी ! अब तो यह लड़के कुछ नहीं करते। हमारे मरद तो दिन-दहाडे लूट लेते थे।``

मोती ने आँखे मिचकाकर कहा - तू भी तो तब जवान थी।``[1]

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ - भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 251

यह स्त्रियाँ जो भी रस्ते में मिल जाता उसका हाथ पकड़कर भीख माँगती, अश्लील हरकते करती। पुलिस के सिपाही अब खुद ही उनकी तंबूओं में आने लगे।

इस कहानी के नायक सुधीर को औरत का ऐसा घिनौना रूप देखकंर धक्का पहुँचता है । ``उसका हृदय इसे देखकर उद्विग्न सा एक बार भीतर-ही-भीतर हाहाकार कर उठा। कुछ ही दूर पीछे कुछ लड़कियाँ नाच रही थी। उनका गीत आसमान में भँवर मारता काँप रहा था। किन्तु नारी का यह मोल देखकर उसकी अंतरात्मा में शूल-सा-चुभने लगा। जिसके न लज्जा थी, न संकोच, न पवित्रता, न अन्य ही कोई भाव-वे पशु नहीं तो क्या है ? किंतु न जाने कहा से सुधीर के मन में एक करूणा जाग उठी। उसने कहा- ``वे पशु है क्योंकि वे अशिक्षित है, दरिद्र है और संसार उनकी मजबूरियों को लूटता रहा है और सुधीर उदास हो गया।``[1]

इस तरह राघवजी ने अशिक्षितता और दरिद्रता ही इनके चरित्र उध्वस्तता का कारण बताकर नारी को इन कारणों से छुड़ाने का आवाहन किया है।

<u>कमीन :-</u>

इस कहानी में भी रांगेय राघवजी ने अशिक्षा और दरिद्रता के कारण समाज में घुटती हुई नारी का दर्शन कराया है। इस कहानी में निम्न जाति के मजदूर और चमारों की बस्ती में ही सुशील रह रहा है। दिन भर काम करना और रात को जुआ खेलना, ताड़ी-शराब पीकर औरतों को पीटना ही इन निम्न लोगों की जिंदगी बन गयी है। सुशील इन लोगों के रोज के झगड़ों से तंग आ गया है। सुशील के विचार से हर एक की जिंदगी में क्रांति लायी जा सकती है। इसके लिये खुद का मूल्य जानना अत्यावश्यक है। अतः वह इन शराबियों को सुधारने के लिए सभी औरतों से कहता है कि जब जब ये लोग शराब पीकर आये उस दिन इन्हे खाना मत देना। अपने आप कुछ दिनों में सुधर जायेंगे। लेकिन अशिक्षा, दरिद्रता और रूढ़ियों में पिसी हुई औरते यह बात नहीं समझती। वह खुद ही औरत को उपभोग का साधन समझती है। सुशील के कहने पर एक बूढ़ी औरत सुशील से कहती है - ``औरत तो मर्द के पाँव की जूती है बाबू, अभी ब्याह नहीं

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 253

हुआ, जब हो जायेगा तब तुम भी समझ जाओगे। अभी तो बच्चा हो, निरे बच्चा---``[1]

<u>कुछ नहीं</u> :-

इस कहानी में लेखक ने समाज में घटता हुआ नारी का अस्तित्व व्यक्त किया है इस कहानी का क्लर्क अपनी गर्भवती पत्नी को मारकर उसे पागल कराके घर से बाहर निकालना चाहता है। क्लर्क का अन्य कई लड़कियों से नाजायज संबंध है। अत: वह पत्नी क्लर्क से कहती है - ``औरत इससे पागल होकर ऊत्यजलूल बकने लगी कि मैं तेरा खून पी जाऊँगी। मैं तुझे जान से मार डालूँगी। तू कमा-कमा के रंडियों का पेट भरता है तभी मुझे निकलना चाहता है। मैं तेरा भंडा फोड़ दूँगी।``[2]

लेखक इस कहानी में कहते है कि भारतीय स्त्री ही खुद की आजादी के खिलाफ है - ``हमारे देश में स्त्रियाँ उसे आदमी नहीं समझती जिसके कोई पत्नी न हो। पुरूष जब तक स्त्री को अपने अधिकार में नही रख सकता, स्त्रियाँ उनपर हँसती है। जंगली पशु को जंजीरों से बांधकर ही पालतू बनाया जाता है।``[3]

<u>नई जिंदगी के लिए</u> :-

इस कहानी में लेखक ने नौ लड़कियों के एक कुटुंब के माध्यम से घुटती हुई लड़कियों की मानसिकता, अंधश्रद्धा और अज्ञान के कारण लड़के को लड़कियों से ज्यादा महत्व देनेवाली सामाजिक प्रवृत्ति और इस प्रवृत्ति के कारण नारी पर होनेवाले अनन्वित अत्याचारों का वर्णन किया है।

इस कहानी के पात्र बाबूजी एक सामान्य इन्सान है। उनकी आमदनी भी कम है। फिर भी लड़के की आस के कारण दो बिवीयों की मौत के बाद भी उन्होंने तिसरी शादी की है और हर साल एक लड़की पैदा करते जा रहे है। नौ लड़कियाँ होनेपर भी उनकी आँखे नहीं खुली है। घर की आर्थिक दशा बिघडती जा रही है। इसके कारण वे खूद का मानसिक संतुलन खो चुके है। और प्यार से वंचित लड़कियाँ

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 54
2. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 257
3. वही, पृ. 258

बुरी तरह पीट रही है - ``कन्या पर हाथ उठा रहा है चिरंजी ? यह तो कोई रीत नहीं है। अरे तेरे घर में जनम लिए है निठुर। निर्दयी बनकर क्यों हत्या कर रहा है ?``[1]

बाबूजी बेटियों के जनम के लिए अपनी पत्नी को ही जिम्मेदार समझ रहे है। उन्हें अपनी मरी हुई माँ पर गुस्सा आ रहा है। जिन्होंने उन्हें बेटे की आस लगाकर फिर से शादी करने की सलाह दी थी।

``अगर तुझ जैसी अभगिन मेरे घर न आती तो क्यों मेरी जिंदगी हराम होती। अब वह बुढ़िया तो जिंदा नहीं है, जिसने पहली दो बहुएँ मरने पर हाय-हाय करके खा डाला था कि बेटा ! ब्याह कर। वर्ना घर का दीपक बुझा जाता है। अब जल रहे न चिराग ? दिन में भी नहीं बुझते !``[2]

प्रस्तुत कहानी के द्वारा लेखक यही जताना चाहते है कि नारी कोई पशु नहीं है ज्यों कि हर साल बच्चे पैदा करे। नारी का वास्तविक स्तर अगर उठाना है तो भारतीय नारी की पहले खुद की इज्जत करनी होगी। इस कहानी की बुढ़िया पुराने विचारों की है। अत: वह खुद ही नारी को कोई महत्व नहीं देती और वंश का दीपक न बुझने देनेवाली ढकोसली बात अपने बेटे के मनपर थौप देती है।

(8) प्रेम :-

प्रेम मानव के मन में उठनेवाली एक मिठी संवेदना है। पर समाज में आज `प्रेम` अपना वास्तविक मूल्य खो चुका है। आत्मिक प्रेम अब इतिहास का विषय हो गया है, और इसीलिए समाज प्रेम और प्रेमियों की ओर संशय की दृष्टि से देखता है। डा. रांगेय राघव जी ने समाज में प्रेम के नाम पर खेले जानेवाली नग्न वासनाओं को महसूस किया और इसीलिए आत्मिक प्रेम का आवाहन किया है। प्रेम के नामपर स्त्री के दिलो दिमाग पर कब्जा करके उसे हमेशा के लिए खुद का गुलाम करानेवाली पुरूषनीति को उन्होंने झकझोडा है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 117

2. वही, पृ. 118

<u>प्रवासी</u> :-

प्रस्तुत कहानी में लेखक गोपालन और कोमल के माध्यम से एक अनुठी प्रेम कहानी को व्यक्त किया है। गोपालन ब्राह्मणपुत्र है। वह मंदिर का अर्चक है। गरीब होने के कारण उसकी शादी कोमल से नहीं होती। कोमल की शादी वेंकटरानन से होती है। कोमल गोपालन का खुद के प्रति होनेवाला स्नेह जानती है। पर गोपालन का कोमल के प्रति होनेवाला प्रेम एकतर्फा है अत: उसके मन में अहंभाव पैदा हो जाता है। कुछ दिनों के बाद उसे यह खबर सुनने में आती है कि वेंकटरामन खूब बीमार है। और कोमल के पिता के साथ उसके अक्सर झगड़े होते है। यह बाते सुनकर गोपालन खुश होता है क्योंकि वह कोमल को वेंकटरामन के साथ खुश नहीं देखना चाहता।

``चार महीने बीत गए। गोपालन ने फिर एक बात सुनी। छाती के घावों पर मरहम सा लगा। विद्वेष की धधकती आग बुझी। कितना निकृष्ट सुख था वह ! किंतु यह वह उस समय अनुभव नहीं कर सका।``[1]

लेकिन वेंकटरामन की मौत के बाद गोपालन का हृदय परिवर्तीत होता है और उसका अहंभाव नष्ट हो जाता है। वह कोमल के लिए प्राणत्याग करने को भी तैयार होता है। पर कोमल अपने पापी जीवन का साथ उसके जीवन पर न पड़ने देने का निश्चय करती है और उसे अपने जीवन से दूर जाने के लिए कहती है। प्रस्तुत कहानी के द्वारा लेखक ने प्रेम का वास्तविक मूल्य प्राप्त करना नहीं तो न्यौंछावर करना ही है। यह बताने की कोशिश की है।

<u>देवदासी</u> :-

प्रस्तुत कहानी में रंगभ्रद और रूक्मिणी जो देवदासी है इनके प्रेम कहानी का वर्णन है। सिंहल का निवासी रंगभ्रद देवदासी रूक्मिणी से प्रेम करता है। पल्लव-राज के विशाल कामाक्षी के मन्दिर में पुजारी रत्नगिरी के साथ देवदासी रहती है। देवदासी रूक्मिणी देवता को निष्काम रूप से अर्पित हो चुकी

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग -1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 392

है। उसने अपना स्त्रीत्व, मातृत्व, आजन्म कुमारी रहने का उत्सर्ग किया है। रंगभद्र और रुक्मिणी कामाक्षी मंदिर के पीछे छिपकर मिलते है। रंगभद्र उसे जीवन का महत्व बताता है। उसे अपने साथ सिंहलद्विप को लेकर जाना चाहता है-

``परसो मैं सिंहलद्विप जा रहा हूँ। प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे साथ पोत पर आरूढ़ होकर मेरी अर्द्धांगिनी के रूप में चलोगी। परसो कांची के देव नन्दिर में महोत्सव होगा। उस दिन लोग अपने-अपने काम में संलग्न होंगे। किसी को भी अधिक चिंता नहीं होगी। हम तुम परिक्रमा के पीछे वाली पुष्पकरिणी के पास मिलेंगे और तुम निर्भीक, पाप की भावना से हीन मेरे साथ चलोगी, क्योंकि तुम मुझसे प्रेम करती हो।``[1]

कांची के देव मन्दिर के महोत्सव में रूक्मिणी का नृत्य समाप्त होते ही मन्दिर के भीतरी परिक्रमा में सेनापती पुत्र धनंजय ने उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की। छीन-झपट में ही उसकी मृत्यु हो गई। रंगभद्र और रूक्मिणी का प्यार अधूरा रहा।

<u>अवसाद का छत :-</u>

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने चन्द्रमोहन और पुष्पा के बीच चलकर अघटित रूप से खत्म होनेवाली प्रेमकहानी का वर्णन किया है। पुष्पा चंद्रमोहन से प्रेम करती है। चंद्रमोहन सेना में पाइलट है। पुष्पा कलकत्ते में टीचर है। बहुत दिनों के बाद दोनों मिलते है। चन्द्रमोहन पुष्पा से आवेग से प्रेम करता है - ``चन्द्रमोहन ने उसके बालों की लटों को छुआ। उनमें गन्ध न थी। फिर भी उसने उसे देखा और निस्संकोच होकर उसके गाल को चूम लिया।

पुष्पा लाज से मुस्कराई। कहा - ``अनाड़ी । बरसों हो गए तमीज न आई। अब यह बचपन के दिन है ? यह तो सब कालेज में बीत गये।``[2]

पुष्पा से मिलकर जाने के बाद बर्मा की लढ़ाई में चन्द्रमोहन मारा जाता है। लेखक ने यहाँ सैनिकों के जीवन के खतरे का वर्णन किया है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग -1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 187
2. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग -1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 29

ब. आर्थिक समस्याएँ :-

जीविकोपार्जन मनुष्य के जीवन की एक मुलभूत समस्या है। इसीलिए जीवन में `अर्थ' को सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन आर्थिक मूल्यों से प्रभावित रहा हैं। आर्थिक मूल्योंपर ही समाज का विकास आधारित है। आज हर एक रिश्ते में धन एक मानदण्ड बन चुका है।

अर्थ के कारण ही समाज तीन वर्गों में विभाजित हो गया है- उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग। और इसी अर्थ के कारण अपने अस्तित्व के लिए इन वर्गों में संघर्ष होते रहते है। बेकारी, गरीबी, अज्ञानता, बढ़ती आबादी आदि भी आर्थिक समस्या के कुछ कारण है। वर्तमान समय में हुए दोनों महायुद्धों ने भारत की आर्थिक स्थिति को और ही संकटपूर्ण बना दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की आर्थिक स्थिति के संदर्भ में डा. गौतम कहते है - ``इस काल में देश में एक नया पूँजीपति वर्ग उभरकर आया है, राजनीति पर जिसका प्रभाव है। इस संक्रमण की स्थिति में मध्यवर्ग अत्यंत शोचनीय स्थिति में है। उसका आर्थिक संघर्ष पहले की अपेक्षा बढ़ गया है। अनैतिक साधनोंद्वारा यह वर्ग अपने स्तर को कायम रखना चाहता है।``[1] डा. रांगेय राघव ने वर्तमान जीवन की आर्थिक समस्याओं को बहुतसी कहानियों में अंकित किया है।

लक्ष्मी का वाहन :-

इस कहानी के सेठ फकरीचन्द उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। सेठ फकीरचन्द अपने कारखाने के मजदूरों को बोनस देने के लिए तैयार नहीं है। उनके वेतन में कटौती करते है, दो मजदूरों को काम से निकाल देते है। मजदूर गरीब है पर अपने हक के लिए लडना वे भली भाँति जानते है। इसीलिए वे अपनी मजदूरी का पूरा मूल्य वसुल करना चाहते है। इसीलिए मजदूर मालिक के खिलाफ जुलूस निकालते है -``और उनके पीछे मजदूर, मजदूरनी तथा सामने कुछ गंदे से कपड़े पहने बाबू लोग थे, जिनका बाबूपन अभी छिप नहीं सका है। वे लोग नारे लगाते हुए बढ़ रहे है। मैले-कुचले, मगर चेहरे दृढ़ है, कठोर, जैसे

1. डा. मुलचन्द गौतम- हिन्दी नाटक की भूमिका : मध्यवर्ग के संदर्भ में उदृधत - डा. दिनेशचन्द्र वर्मा : स्वातंत्र्यौत्तर हिन्दी नाटक: समस्या और समाधान : पृ. 64

जीवन की मर्यादा आज खोले से निकलकर मैदानों पर बही आ रही हो, टूटती नदी की तरह गर्राती हुई।``[1]

सेठ फकीरचन्द पुलिस को रूपए देकर मजदूरों को पीटवाते है और जबरदस्ती से कारखाने में घुसे हुए मजदूरों को बाहर निकालकर कारखाने पर कब्जा कर लेते हैं।

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से अपनी आर्थिक दीनता से जुझनेवाले मजदूरों की छटपटाती जिंदगी का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

नई जिन्दगी के लिए :-

`नई जिन्दगी के लिए` यह कहानी आर्थिक रूप से पूरी तरह टूटते बिखरते मध्यवर्गीय क्लर्क की जिन्दगी का आईना है। यह क्लर्क घर के दीपक को जन्म देने की ढकोसली बात को लेकर दो पत्नीयों की मौत के बाद भी तिसरी शादी करता है। उसे कुल नौ लड़कियाँ है और वेतन अस्सी रूपए महीना मिलता है। सारी लड़कियाँ और उनकी माँ घूट-घूटकर, सहम-सहमकर अपनी जिन्दगी बिता रही है। पूरे घर पर एक मनहुसियत छायी हुई है। डा. सरजूप्रसाद मिश्र इस कहानी के बारे में लिखते हैं -

``-----पूरी कहानी में एक संत्रास व्याप्त है। यह संत्रास सार्त्र, कामू जैसे अस्तित्ववादी लेखकों से उधार लिया हुआ न होकर ठोस भारतीय प्रश्नों से संलग्न है। कहानी में आर्थिक समस्याओं से पात्रों के उध्वस्त जीवन की गहरी व्यथा छलकती है।``[2]

इस प्रकार इस कहानी के द्वारा राघवजी ने रूढ़िवादिता के कारण फैली आर्थिक समस्या को उजागर किया है।

कमीन :-

यह कहानी गरीबी और व्यसनांधता में पिसती औरतों की कहानी है जो मजदूरों की

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग -1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 4

2. हिन्दी कहानी के आधारस्तंभ-डा. सरजूप्रसाद मिश्र, पृ. 118

बिवीयाँ है। इस कहानी का सुशील देखता है कि चारों ओर भीषण अज्ञान, गरीबी और गंदगी है। और ऐसे नर्क में स्त्रियाँ अपने व्यसनांध पतियों के साथ जिन्दगी गुजार रही है। मजदूरों के अज्ञान और व्यसनांधता के कारण भविष्य की, अपने बिवी-बच्चों की कोई फिक्र नहीं है। शराब पीना, पत्नी को पीटना, जेवर बेचना आदि रोज की जिन्दगी बन गयी है।

-``बाबू , सारे मस्ता रहे है। इनके मुँह में धर दू आग दो पैसे मिलने लगे है तो यह तो नहीं की भलमनसी से जोड़कर रखे कि वखत-बेबखत काम आयेंगे, बस मिले की दारु-शराब और कुछ नहीं अब उसे देखो कल्ला को, जोड-जोड के कित्ते सामान के लिये और वह हरामी, बस फूंक-फूंक -----।``[1]

सुशील इन पतियों की बिवीयों को उनके हक्कों के बारे में समझाने की कोशिश करता है। पर औरते खुद को कमीन समझती है।

इस प्रकार इस कहानी के द्वारा राघव जी ने भीषण अज्ञान और गरीबी में छटपटाती मजदूर जिंदगी का पर्दाफाश किया है।

फूल का जीवन :-

इस कहानी के पात्र सेठ, नीना, जीवन और रामचरण उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। एक मजदूर का लड़का जो फूल का प्रतिक है वह निम्नवर्ग, शोषितों का प्रतिनिधित्व करता है। लड़ाई के समय मजदूरों को लड़ाई का बोनस मिलता था लेकिन लड़ाई खत्म होने के साथ बोनस भी बंद हो जाता है लेकिन लड़ाई की मँहगाई खत्म नहीं हुई है। लड़ाई का बोनस माँगने के लिए मजदूर हडताल करते है। एक मजदूर का लड़का है जिसे खाने के लाले पडे है, उसकी माँ उसे रात को कई छोडकर चली गई है। चुनाव नजदीक आया है। सेठ मजदूरों की सीटों पर कब्जा करना चाहता है इसीलिए मजदूरों में रूपये बाँटकर उन्हें खरीदना चाहता है।

`---मुंशी जी फिर किंकर्तव्यविमूढ होने लगे थे। मैंने धीरे से कहा- ``सुनिए। मजदूरों को खरीद लीजिए।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग -2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 51

जितने रूपयों की जरूरत हो मुझसे ले जाइए। लेकिन एक भी हाथ से न निकलने पाए।``[1]

चुनाव में भीड़ बनाने के लिए मजदूरों की जरूरत है इसीलिए मजदूरों में रूपये बाँटकर हड़ताल तोड़ा जाता है और चुनाव के लिए भीड इकट्ठा की जाती है। मजदूर अपनी आर्थिक दीनता से जुझकर जिन्दगी के साथ समझौता करते है।

क- शोषितों की समस्याएँ -

समाज की निर्मिती के साथ-साथ शोषण की प्रवृत्ति भी निर्माण हुई। व्यक्ति अपने अस्तित्व और सुख के लिए दूसरों का शोषण करता आ रहा है। शोषित व्यक्ति, समाज इसके खिलाफ आवाज उठाता आ रहा है। दलित, किसान, मजदूर, नारी आदि शोषण का शिकार होते है। रांगेय राघव की कहानियों में इसका चित्रण मिलता है।

लहू और लोहा :-

यह कहानी मजदूर और मालिक संघर्ष के कथानक पर निर्भित है। इस कहानी के प्रेमलत्ता और मजदूरों का काम करनेवाले बाबू लोग मजदूरों को उनके हक्क के लिए सचेत कर रहे है। मालिक लोग पुलिस भेजकर मजदूरों को डरा धमकाकर चुप कराना चाहते है। प्रेमलता कहती है - ``जब तुम्हारा सँगठन ये लोग झूठ बोलकर नहीं तोड़ सकते, तब फौजे भेजकर तुम्हारी हिम्मत तोडते है। वे इस निजाम को तलवार के बल पर कायम रखते है।``[2]

प्रेमलता और बाबू लोग छिपकर मजदूरों को हक्कों के प्रती जगा रहे है। प्रेमलता का पता बताने के लिए पुलिस मजदूरों पर बेतहाशा अत्याचार करती है। जो जो लोग मालिकों के खिलाफ बोलने की हिम्मत रखते है उन्हें पकड़कर पुलिस बंद करना चाहती है। पुलिस चारों ओर से मजदूरों को घेर लेती है और एक एक मजदूर को पिटती है - ``पर मुन्नूलाल चूप रहा। सिपाही ने उसके मुँह पर इतने डंडे मारे कि

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 113

2. रांगये राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पादक. अशोक शास्त्री, पृ. 422

वह खून थूकने लगा। दांत टूट गया। मजदूर खूनी आँखों से देखते रहे। उनकी आँख में दृढता थी वे घूर रहे थे-`` जैसे अगर इंसान को इंसान समझना तुम्हे नहीं आता तो वे सिखा सकते है।``[1]

पुलिस मजदूरों के साथ-साथ उनकी स्त्रियाओं को भी कुचल देती है। और जाते जाते हिरदेई नामक स्त्री के बच्चे को कुचलाकर मार देती है और प्रेमलता को पकड़कर ले जाती है।

कठपुतले :-

इस कहानी में लेखक ने आजादी के बाद भी किसान और मजदूरों पर होनेवाले अत्याचार और तिरंगे की आड में पनप्नेवाली रिश्वतखोरी और कठपुतली शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य कसा है। इस कहानी में एक किसान और एक मजदूर को गिरफ्तार किया है। किसान पर बगावत और मजदूर पर लूट का जुर्म लगाया गया है। जेल में उनपर अत्याचार हो रहे है। उनके घर में कमानेवाला कोई नहीं है इसीलिए घर के लोग भूखे रहकर दिन बिता रहे है। शहर के चार लेखक उन्हें छुडाने की कोशिश कर रहे है - ``इसी को आप आजादी कहते है ? चाहे जिसको जेल में बिना सबूत डाल कर आप जनता के नागरिक अधिकारों पर हाथ डाल रहे है। यह कांग्रेस का राज है।``[2]

जेल में बन्दियों ने न्याय के लिए भूख हडताल शुरू कर दी है। बाईस दिनों की भूख हडताल के बाद बन्दियों के नाक में नलियाँ डालकर जबरदस्ती से दूध पिलाया जाता है। अंत में लेखक ने एक बन्दी ने उसकी होशियारी से जेल से किस तरह रिहाई पायी यह दिखाकर शोषकों को यह चेतावनी दी है कि किसान और मजदूर अब चेता रहे है। वे अब और अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेंगे।

लक्ष्मी का वाहन :-

`लक्ष्मी का वाहन` कहानी शोषक और शोषितों के बीच पनपते संघर्ष की कहानी है। इस कहानी के सेठजी शोषकों का प्रतिक है। और मजदूर हजारों सालों से गरीबी की चक्की में पिसनेवाले

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 424

2. वही, पृ. 454

शोषितों का प्रतिक है। सेठजी हर एक प्रकार से मजदूरों को अपनी मुठ्ठी में रखकर अपनी तिजोरियाँ भरना चाहते है। इसके लिए वह पुलिस का सहारा लेकर हडताल करनेवाले बोनस माँगने वाले मजदूरों पर लाठियाँ, गोलियाँ चलवाते है और अंत में मजदूर वर्ग में आतंक फैलाकर उनपर विजय प्राप्त करते है - ``मुनीम जी, आज ब्राह्मणों को जिमा दो। मेरे सिर पर से बोझा उतर गया है। अब तो सरकार को चाहिए कि हडताल ही गैरकानूनी करार कर दी जाय, ताकि वे लोग फिर गोलियों के डर से हिम्मत ही न करो।``[1]

<u>चौथा तरीका</u> :-

`चौथा तरीका` यह जमींदार और दरोगा की दहशत की कहानी है। इस कहानी के जमीदार और दरोगा दोनों मिलकर गाँव पर अपना राज चलाना चाहते है। मुंशी दिनदयाल जमींदार के आदमी है। उनका पेशा झुठी गवाहियाँ देना है। वे बुढे हो गये है फिर भी उन्होंने तिसरी शादी की है। जमींदार और दरोगा दोनों स्त्री लंपट है। बेडनियों का नाच देखने में अपनी राते गुजारते है। श्यामा दुधवाला है। शहर में जाकर दुध बेचता है इसीलिए उस पर महानगरीय संस्कार हुए है। फिल्मों के गाने गाता है, अंग्रेजी बूट पहनता है। मुंशी दिनदयाल की शादी पर दरोगा और श्यामा में झगडा होता है। दरोगा और जमींदार गाँवपर एकछत्र राज करना चाहते है। इसीलिए श्यामा को पंचायत के सामने खड़ा किया जाता है और उसपर बदजात होने का, गाँव की लड़कियों को छेडने का जूर्म लगाया जाता है। उसपर दहशत जतायी जाती है।

-``क्यों वे श्यामा तेरी यह मजाल साले ! हुकमरान के खिलाफ बगावत करता है ? अबे, सात पुश्तों से इस हवेली ने जवाब नहीं सुना आज तेरी चमडी उधेड कर धर दूँगा।``[2]

और चंदन नाइ को बुलाकर श्यामा के सर के बालों को काटकर उसे गंजा बनाते है। इस तरह जमींदार और दरोगा गाँव में बगावत करनेवाली आवाज को दबा देते है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 7

2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 134

ढ- साम्प्रदायिकता की समस्याएँ :-

समाज में धर्म का अन्यन साधारण महत्व रहा है, जिसके आचरण के कारण मनुष्य में श्रेयस्कर की ओर बढने की लालसा या चाह रही है। मनुष्य के आचरण को हितकर बनाने के लिए धर्म की सहाय्यता रही है। सामाजिक मन:प्रवृत्ति तथा उससे निर्माण होनेवाली आचरण पद्धति को धर्म कहा जाता है। ``इष्ट की प्राप्ति के लिए और अनिष्ट के निवारण के लिए अलौकिक शक्ति की, की गई साधना या प्रार्थना ही `धर्म` कहलाती है।``[1]

धर्म भारतीय संस्कृति और समाज का एक सनातन अंग रहा है। कई शतकों से भारत में साम्प्रदायिकता के दर्शन होते है। समाज में दो धर्मों के बीच किसी कारणवश संघर्ष चल रहा है। इससे राघव जी प्रभावित होकर उन्होंने अपनी कुछ कहानियों में उसका चित्रण किया है।

जाति और पेशा :-

प्रस्तुत कहानी साम्प्रदायिक समस्या पर आधारीत है। इस कहानी में अब्दुल और रामदास की खेती एक दूसरे के पडोस में है। रामदास का भाई श्यामा अब्दुल को अपनी जमीन देता है पर श्यामा के मौत के बाद रामदास उस जमीन पर अपना हक जताना चाहता है। इसीलिए अब्दुल अपने पुराने वकील नरोत्तम के पास चला जाता है जो हिन्दू है। वकील नरोत्तम बेईमान और साम्प्रदायिक है। वह नहीं चाहता कि हिन्दू की जमीन किसी मुसलमान के कब्जे में जाए। इसीलिए वह अब्दुल का केस सुंदरभान की अदालत में चलाना चाहता है। अब्दुल मौलवी साहब से सलाह लेता है। मौलवी साहब उसे कहते है कि यह केस तकवी की अदालत में चलायी जाए क्योंकि तकवी मुसलमान है और फैसला मुसलमान की तरफ से ही होगा। अब्दुल वकील नरोत्तम से यह बात कहता है तो नरोत्तम चिंता में पड़ जाते है। -``वकील साहब ने अधमुंदी आँखो से देखा। तकवी के यहाँ मामला पहुँचाना उनके बस की बात है लेकिन उसमें यही खतरा है, मुसलमान कैसा भी दोस्त हो, आखिर मुसलमान है। वह जब देखेगा कि जमीन का मामला है,

---

1. मराठी विश्वकोश खंड 8वा, तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी , पृ. 17 ``इष्ट प्राप्त्यर्थ व अनिष्ट निवारणार्थ अलौकिक शक्तीची साधना किंवा आराधना म्हणजे धर्म होय.``

फौरन मुसलमान की तरफ हो जाएगा, दोस्ती धरी रह जायेगी। केस तो शायद वे जिता दें, पर हिन्दुओं का इसमें नुकसान होगा। मुसलमान को जमीन दिलाने का मतलब है इनके यहाँ पट्टा कर देना। उन्होंने अब्दुल की बात पर पहलू से विचार किया।``[1]

वकील नरोत्तम अब्दुल से और रूपया वसूल करते है और यह फैसला करते है कि वह खुद केस कमजोर कर देंगे ताकि फैसला अब्दुल के खिलाफ लगे। और सचमूच फैसला अब्दुल के खिलाफ हो जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के द्वारा लेखक ने अदालत में पनपती साम्प्रदायिक्ता पर करारा व्यंग्य किया है।

बच्चा :-

इस कहानी के गोविन्द सिंह का कोई बच्चा जीवित नहीं रहता। इसीलिए गोविन्द सिंह बच्चा गोद लेना चाहते है। पर गोद लिया हुआ बच्चा बिरादरी नही स्विकारेगी इसीलिए वह अपनी पत्नी को गर्भवती का स्वांग रचने के लिए कहता है और वह अपना कस्बा छोडकर दूसरे कस्बे में रहने के लिए जाता है। नये कस्बे में हिन्दू मुस्लिम के दंगे हो रहे थे। जब गोविन्द सिंह अनाथालय में बच्चा देखने के लिए जाता है लेकिन वहाँ उसे मनचाहा बच्चा नहीं मिलता। वह वहाँ से वापस आते वक्त रास्ते में देखता है कि कुछ हिन्दु लोग मुसलमान स्त्री को उठाकर ले जा रहे है और उसके पति को छुरा भोंक दिया है और उनका छोटा बच्चा अपने बाप के पास बैठकर रो रहा है। मरते वक्त वह मुसलमान आदमी अपने बच्चे का हाथ गोविन्द सिंह के हाथ में देता है। गोविन्द सिंह उस बच्चे को लेकर घर आता है और अपनी पत्नी को सारी हकिकत बताता है। पत्नी को जब यह बात समझती है कि यह बच्चा मुसलमान का है तब वह इस समस्या में जाती है कि क्या यह बच्चा उनसे सँभाला जाएगा। वह अपने पति से प्रश्न करती है तो गोविन्द के सामने प्रश्नचिन्ह खडा हो जाता है।

``इस नितांत निर्बल प्रश्न का भी गोविन्द उतर नहीं दे सका। बहती हुई ममता खून की तरह जमा गई थी।

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 81

उसका स्पंदन नष्ट हो चुका था। गोविन्द चाह कर भी इस बात को नहीं छिपा पाया। पत्नी के सामने झूठ पकड़ी जाने से वह विक्षुब्ध हो उठा। क्यों उसे स्वयं इतना अधर्म सूझा ? यह बालक क्या कभी अच्छा बनेगा ? क्या वह हिन्दू बन सकेगा ? सोचते-सोचते उसे लगा जैसे सारी दुनिया घूम रही थी। उसके हृदय में उल्टे भाव उठने लगे। अब वह धीरे-धीरे बालक के प्रति कठोर हो चला। दोनों हाथ फैला कर उसने पत्नी से कहा - ``बच्चा इधर दे दे। ला मैं इसे फैंक आऊँ। यह मुझे पानी देगा ? मलेच्छ ।``[1]

पर अंत में गोविन्द की पत्नी का हृदय परिवर्तन होता है और वह बच्चे में खो जाती है।

प्रस्तुत कहानी के द्वारा लेखक ने समाज में पनपती कटु धार्मिकता और बच्चे का कोई धर्म नहीं होता इस सच्चाई का प्रतिपादन किया है।

<u>जानवर देवता</u> :-

इस कहानी में लेखक ने भिन्न-भिन्न धर्मो में जानवरों को देवता का स्थान देनेवाली बात पर अपने विचार व्यक्त किए है। इसीलिए लेखक ने हिन्दू-मुस्लिम दंगे की एक मजेदार घटना का भी आधार लिया है। जिसमें लेखक ने एक गाँव में हुई हिन्दू-मुस्लिम मुठभेड का उदाहरण दिया है जिनमें हिन्दू कम थे और मुसलमान जादा थे। मुसलमानों को पराजित करने के लिए हिन्दू चैनगौडा युवक ने एक बाल्टी पानी में सुअर का खून उडेलकर वह पानी मुसलमानों पर फेंकना शुरूआत किया जिससे ज्यादा मात्रा में मुसलमान होकर भी भाग गये।

लेखक ने यहाँ इस घटना के द्वारा झुठी धार्मिकता पर व्यंग्य किया है।लेखक का कहना है कि पुराने लोगों ने अपनी जरूरतों के अनुसार हर एक चीज को महत्व दिया -``रजपूत के लिए तलवार कीमती चीज थी। वह तलवार की पूजा करता था। ब्राह्मण के लिए विद्या बड़ी थी। वह सरस्वती-पूजा में किताबें रखकर पूजा करता था। बनिए के लिए दौलत बड़ी थी। वह दीवाली में रूपए की पूजा करता था। शूद्र के लिए नाज बड़ा था। वह होली में आग जलाकर नया नाज भूनकर रंगरेलियाँ मनाता था। और भी पुराने जमाने में गाय मुफीद थी, क्योंकि बैल देती थी, दूध देती थी। वह भी देवता बन गई। इसी तरह जब

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 114

शुरू में आदमी प्रकृति को देती थी, दूध देती थी। वह भी देवता बन गई।``[1]

इस प्रकार लेखक ने झुठी धार्मिकता और अंधी समाज व्यवस्था पर व्यंग्य कसा है।

इ. शरणार्थियों की समस्याएँ :-

भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय दंगे हुए। इस भीषण नरसंहार से न केवल शरणार्थी-समस्या खड़ी हुई, बल्कि लूटं-मार, आगजनी, बलात्कार, खून-खराबी आदि ने मानव मूल्यों को रौंद डाला। ``तब नौ आखाली जल रहा था, कलकत्ता ही नहीं, सारा बंगाल ही आग की लपटों में राख हो रहा था। पंजाब में गले कट रहे थे, स्त्री-पुरूष एवं मासूम अबोध बच्चियों के रक्त गन्दी नालियों में बह रहे थे ---यह स्वतंत्रता का उपहार था, जो नयी पीढी को मिला था और जिसका एक वर्ग सर्जनात्मक प्रतिभा से विभूषित था।``[2]

पाकिस्तान से अनेक शरणार्थी भारत आए। यहाँ उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। शरणार्थियों का जीवन रांगेय राघव जी ने साक्षात देखा और अपनी कुछ कहानियों में उसका चित्रण किया।

<u>**तबेले का धुंदलका**</u> **:-**

यह कहानी सिंधी शरणार्थियों पर लिखी है। इस कहानी का शरणार्थी नायक अपनी पत्नी, बच्चा और बहन के साथ रहने के लिए मकान ढूँढ रहे है। उन्हें कही रहने के लिए कमरा नहीं मिल रहा है इसीलिए वह सब एक पेड के नीचे दिन काट रहे है। कमरे के लिए हर कोई पगडी माँग रहा है। पर शरणार्थी गरीब है पगडी नहीं दे सकता। चारों ओर उन्हें हिकारत की दृष्टी से देखा जाता है। चारों ओर हिन्दू-मुस्लिम के दंगे हो रहे है। और ऐसे नाजूक हालात में यह नायक अपने परिवार के साथ दर-दर की ठोकरे खा रहा है। ऐसे में एक आदमी उन्हें मकान देने के लिए तैयार हो जाता है पर पगडी के तौर पर वह

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 362
2. हिन्दी कहानी : उद्‌भव और विकास -डा. सुरेश सिन्हा, पृ. 549

उसके बहन की इज्जत चाहता है। इस बात से नायक का खून खौल उठता है पर इसके सिवा उसके सामने कोई चारा नहीं है -

``मैं सिर पकडकर बैठ गया। मेरी स्त्री और बच्चा सब आँखो में डोल गये। ऐसा तो सुना था कि जगह दे दी, फिर जोर-जबरन किसी तरह बाद में छिपा चोरी काम निकाल लिया। पर यह जानवर मुझसे साफ-साफ कह रहा था। यह मेरी बहिन जिसे मैं इतना साफ और पाक समझता था। आज यह मुझसे कह रहा है। इतनी हिम्मत क्योंकि इसने क्योंकि यह मेरी मजबूरी जानता है।``[1]

इस तरह इस कहानी के द्वारा लेखक ने शरणार्थियों की नाजायज मजबूरियों पर गौर किया है।

मुफ्त इलाज :-

यह कहानी शरणार्थी महिला की समस्या पर लिखी गयी है। इस कहानी का नवाब लैला-मजून का गाना गाकर जिंदगी बसर करता है। वह एक पंजाबिन शरणार्थी महिला को देखता है जो मजबूरीवश अपने बच्चे को त्याग रही है। सारी महिलायें उस महिला पर ताने कस रही है। नवाब उस महिला के बच्चे को अपनाता है - ``बेवकूफ ! गलती किससे नहीं होती। और भागी हुई तबाह औरत के पास चारा ही क्या था ? अच्छा तो यह नहीं हुआ पर मजबूरी का नाम सब्र है। क्या किया जाये ? जमाना ही ऐसा है समझे ? औरत की कोई जात होती है ? जिसका बाप और खाविंद मर गया वह क्या करे ? अबे यह इलाज है, हर लगे न फिटकिरी ---मुफ्त----``[2]

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि, रांगेय राघव जी की कहानियाँ यथार्थ से भरी हुई है। उनका दृष्टिकोण प्रगतिशील है। इस दृष्टिकोण से वे जीवन की समस्याओं की ओर देखते है। वे एक सामाजिक यथार्थवादी लेखक होने के साथ-साथ मानवतावादी एवं सुधारणावादी भी है। उनकी सामाजिक समस्या की कहानियों के अंतर्गत नारी समस्या, अंधविश्वास की समस्या, व्यसनांधता की समस्या और भ्रष्टाचार की समस्याओं का सृजन हुआ है। रांगेय राघव के पात्र अत्यंत सजीव है। उनके आर्थिक समस्या

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 28
2. वही, पृ. 142

के अंतर्गत आनेवाली कहानियों में मजदूर और दयनीय लोगों का चित्र मिलता है। शोषितों की समस्या की कहानियों में मजदूर-मालिक संघर्ष का विचार किया है और उससे होनेवाले सामाजिक विसंगतियों को सँवारने की कोशिश भी की है। साम्प्रदायिकता की समस्या की कहानियों में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष का चित्र मिलता है। शरणार्थियों की समस्या का भी कुछ कहानियों में चित्रण हुआ है जिससे देश विभाजन का चित्र सामने आ जाता है। इस प्रकार रांगेय राघव जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के तत्त्वों को उभारने की कोशिश की है।

****